[Shri G. Lakshmanan]

third Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions.

12.20 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) RELIEF MEASURES FOR THE FLOOD VICTIMS OF GORAKHPUR DISTRICT

श्री महावीर प्रसाद (बांसगांव) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान अपने निर्वाचन क्षेत्र में जो गत माह अर्थात् अगस्त, सितम्बर एवं अक्तूबर, सन् 1981 में प्रलयकारी एवं भयंकर बाढ़ से जानवरों, फसलों, मकानों, बांधों आदि को जो तीन-तीन बार अपारक्षति हुई है, उसके प्रति आकर्षित करना चाहता हूं। इस भयंकर बाढ़ से गांव के गांव बह गए हैं। सम्पूर्ण भवन धराशायी हो गए हैं। उदाहरण के लिए गरयाकोल, ददरी, खुरभार, सिहोड़वा, अहनवभार, पुर, चिलहरी, भगवजा, सिसवालिया, पोहरिया, नौवा डुमरी, पटना, लचकौंदा, सरार, मझगांवां, गजपुर, धसकी, अइमा, कड़जहीं, मढ़वलिया, गायघाट, सेमरा शानिक चक आदि गांवों के 80 प्रतिशत भवन धराशायी हो गए हैं। बाढ़ के समय राज्य सरकार ने युद्ध-स्तर पर सामयिक एवं तात्कालिक सहायता की थी और आशा व्यक्त की थी कि इस क्षति को पूरा करने के लिए सभी संभव सहायता की जाएगी। लेकिन समुचित कोई व्यवस्था नहीं हो पायी। फलस्वरूप बह गए गांवों की दशा अत्यन्त दयनीय हो गई है। उसके बाद पुनः केन्द्रीय सरकार की तरफ से उस क्षति को आंकलन करने के लिए एक दल गोरखपुर में गया और वह दल भी सिफारिश किया था कि अविलम्ब इस क्षति को पूरा करने के लिए भरपूर सहायता की जाएगी, किन्तु खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि अभी तक बाढ़ से पीड़ित एवं प्रभावित लोगों को भवन आदि की जो क्षति हुई है, उसके निर्माण हेतु कोई सहायता नहीं दी गई है।

12.22 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

अभी हाल ही में क्षेत्र का दौरा करने के बाद जब मैं जिला अधिकारी गोरखपुर से सम्पर्क स्थापित किया तो पता चला कि पूरे जनपद के लिए कुल 13 लाख रुपये इस समय सुरक्षित रूप में पड़ा हुआ है। लेकिन यह रकम क्षति की तुलना में इतनी कम है कि उस धन का वितरण किसी भी प्रभावित क्षेत्र में नहीं हो सकता। कारण कि यदि इस रकम को जनपद के किसी भी एक क्षेत्र में बांटा जाता है तो जनपद में एक असंतुलन का विचारक वातावरण बन जाएगा। ऐसी परिस्थिति में जिलाधिकारी ने बताया कि केन्द्रीय सरकार से डेढ़ करोड़ रूपये की मांग की गई है।

अस्तु आपके माध्यम से केन्द्रीय सरकार से अनुरोध है कि वह मेरे निर्वाचन क्षेत्र तथा जनपद के अन्य क्षेत्रों में जो लोग बाढ़ से प्रभावित हैं और उनके मकान गिर गए हैं उनके निर्माण के लिए अधिक से अधिक धन की व्यवस्था करें ताकि उक्त क्षेत्र में रहने वाले भूमिहीन, गरीब, असहाय एवं बेरोजगार कमजोर वर्ग के लोगों तथा विशेषकर हरिजनों का कल्याण हो सके।

(ii) TECHNOLOGY FOR THE EXPLORATION AND ECONOMIC EXPLOITATION ON NICKEL AND COBALT MINERALS

SHRI K. P. SINGH DEO (Dhenkanal): It is a paradox that, while rich,